# आनन्ददायी अधिगम के माध्यम से साक्षरता

इन्दिरा विजयसिम्हा

दक्षिणी ओडिशा के रायगढ़ जिले के एक दुर्गम कोने में स्थित है एक उनींदा सा गाँव- काशीपुर। धीरे-धीरे बलखाती हुई पहाड़ियों और सोतों के कारण यह गाँव किसी चित्र सरीखा सुन्दर और सुहावना लगता है। यह पहाड़ियाँ खेतों की चारखानेदार रज़ाई से ढकी हुई हैं और दर्शक इस प्राकृतिक दृश्य में मौजूद तरह-तरह के हरे रंग देखकर दंग रह जाता है।

लेकिन यहाँ के लोगों के जीवन की वास्तविकता को देखें तो वह बहुत अच्छी नहीं है। पहाड़ियों में समृद्ध खनिज-निक्षेप छुपे हुए हैं जिनकी वजह से खनन कम्पनियाँ अपनी शोर-शराबेदार मशीनों और विशालकाय ट्रकों के साथ यहाँ आई हैं। यहाँ मुख्यतः आदिवासी आबादी है जो सदियों से औपनिवेशिक व उत्तर-औपनिवेशिक शासकों का शोषण सहने के अलावा दीर्घकाल से ग़रीबी का सामना करती आई है और मलेरिया का शिकार है। यहाँ साक्षरता की दर कम है और लगभग तीस साल पहले तक यहाँ कोई स्कूल नहीं था। अग्रगामी नामक संगठन ने लोगों के अधिकारों को सुनिश्चित करने और शोषण के ख़िलाफ़ उन्हें सशक्त बनाने के लिए समुदायों के साथ काम करने के उद्देश्य से इस गाँव में अपना कार्य शुरू किया। इन क्षेत्रों में सरकार द्वारा स्कूल स्थापित करने के बहुत पहले ही अग्रगामी ने काशीपुर के आस-पास की बस्तियों में रात्रि-पाठशालाएँ शुरू की थीं और इन स्कूलों में पढ़ना-लिखना सीखने वाले युवक-युवतियाँ अपने उन दिनों के असाधारण उत्साह को आज भी याद करते हैं। आख़िरकार जब सरकार ने बच्चों को शिक्षित करने की ज़िम्मेदारी ली तो अग्रगामी ने आजीविका और स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करने का फ़ैसला किया। अफ़सोस की बात यह थी कि अग्रगामी ने देखा कि स्कूलों के होते हुए भी बच्चे जल्दी ही स्कूल छोड़ देते थे और पीढ़ी-दर-पीढ़ी न्यून साक्षरता और ग़रीबी के चक्र में फँसे रहने का सबसे ज़्यादा ख़तरा लड़कियों को था। लगभग पन्द्रह साल पहले अग्रगामी ने लड़कियों के लिए एक प्राथमिक स्कूल शुरू किया जिसे मुक्त ज्ञान कुटीर (एमजीके) कहा जाता है।

### नवाचार की आवश्यकता

अन्य स्कूलों की तरह ही अग्रगामी स्कूल में भी शिक्षक पारम्परिक तरीक़े से पढ़ाते आ रहे थे यानी पहले अक्षरों पर ध्यान केन्द्रित करते थे और बाद में पाठ्यपुस्तकों से ज़ोर से पढ़ते थे तथा बच्चे उसे दोहराते थे। अग्रगामी की संयुक्त निदेशिका विद्या दास ने जो कुछ देखा, उससे उन्हें निराशा हुई। उन्होंने कहा, "यह ऐसा ही था मानो शिक्षकों की नीरस वाणी रूपी कम्बल के नीचे बच्चों की रचनात्मक क्षमता दब गई हो!" उन्होंने लिखा, "...जिस स्कूली शिक्षा में बच्चों को रचनात्मक और दिलचस्प तरीक़े से अपने दिमाग और संज्ञानात्मक क्षमताओं का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहन और अवसर प्रदान नहीं किया जाता तथा यान्त्रिक रूप से याद करने पर बहुत अधिक ज़ोर दिया जाता है, वह शिक्षा बच्चों के मानसिक विकास को प्रभावित करती है। इससे बच्चों की रुचि घटती है और अधिगम धीमा हो जाता है, और इस कारण, साक्षरता के बुनियादी कौशल तक को हासिल करने के लिए सामान्यतः लगने वाले समय से दोगुने से अधिक समय की आवश्यकता होती है।" (अग्रगामी वार्षिक रिपोर्ट, 2016-17)।

इस चिन्ता के चलते विद्या दास ने साक्षरता सिखाने के लिए एक अलग दृष्टिकोण के बारे में सोचा जिसे रचनात्मक भाषा विकास प्रयास या सीएलडीई (क्रियेटिव लैंग्वेज डेवलपमेंट एफर्ट) कहा गया। इस दृष्टिकोण में पारम्परिक प्रक्रिया को छोड़कर, एक अधिक बाल-केन्द्रित और समग्र भाषा दृष्टिकोण को अपनाया जाता है, जिसमें ज्ञात शब्दों, वस्तुओं, व्यक्तिवाचक संज्ञाओं, मज़ेदार कविताओं और गीतों ( जिन्हें बच्चे आसानी से याद रख सकते हैं) के माध्यम से ध्वन्यात्मक समझ पैदा की जाती है। इससे अधिगम अधिक सहज और जल्दी होता है और यह बच्चे और शिक्षक दोनों के लिए कम तनावपूर्ण होता है।

### सीएलडीई क्या है?

एमजीके स्कूल में विकसित मॉडल पर आधारित क्रिएटिव लैंग्वेज डेवलपमेंट एफर्ट (सीएलडीई), आदिवासी जिलों में सरकार द्वारा संचालित स्कूलों में साक्षरता को मज़बूत करने का एक प्रयास है। इसका लक्ष्य है ओडिशा के आदिवासी जिलों में पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चों की पढ़ने की क्षमता और भाषागत क्षमताओं में सुधार करना। यहाँ के समुदाय का साक्षरता या स्कूली शिक्षा का कोई इतिहास नहीं है। इन इलाकों में सरकारी प्राथमिक स्कूलों में कम योग्यता प्राप्त और अल्प-प्रेरित शिक्षक होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्राथमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद भी अधिकांश विद्यार्थियों का पठन-कौशल लगभग न के बराबर होता है। सीएलडीई की पद्धति में कई अनूठी विशेषताएँ हैं।

यह वर्णमाला-केन्द्रित पद्धति की प्रक्रिया को उलट कर, साक्षरता-अधिगम को प्राकृतिक भाषा सीखने की तरह सहज बनाने का प्रयास करती है। यह बच्चों को इस बात के लिए तैयार करती है कि वे पठन के ध्वनि-विज्ञान को समझ लें। इसके लिए बच्चों को अर्थपूर्ण शब्दों, वाक्यों व विचारों के माध्यम से, जिसकी शुरुआत घर-परिवार, परिचित वस्तुओं, कविताओं व कहानियों के साथ होती है, लिखित भाषा से जुड़ने और उसे आत्मसात करने के अवसर दिए जाते हैं। बच्चे को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि शब्द और अक्षर की ध्वनियों के बीच का सम्बन्ध स्थापित हो सके। इस प्रकार पढ़ना, लिखना और साक्षरता का विकास साथ-साथ चलता है। यह कार्यक्रम साक्षरता और पढ़ने के विकास के एक अद्वितीय रचनावादी मॉडल पर आधारित है।

**सीएलडीई के चरण**

सीएलडीई, बच्चों की बुनियादी क्षमताओं पर आधारित है यानी कि भाषा सम्बन्धी एवं सीखने की क्षमताएँ। छह साल की उम्र में जब बच्चे औपचारिक स्कूली शिक्षा में प्रवेश करते हैं, तब वे कम से कम एक भाषा जानते होते हैं। शोध बताते हैं कि छह साल की उम्र में बच्चा 2000 से अधिक शब्दों का उपयोग कर सकता है और उससे कई अधिक शब्द समझ सकता है। वे ख़ुद को पूर्ण वाक्यों में व्यक्त कर सकते हैं और किसी घटना के बारे में बात कर सकते हैं या कोई कहानी सुना सकते हैं। यह देखते हुए कि बच्चे शब्दों के माध्यम से, सक्रियता से अपनी दुनिया की समझ बना रहे हैं, सीएलडीई बच्चों को लिखित भाषा की यात्रा की शुरुआत कराने के लिए शब्दों पर ध्यान केन्द्रित करती है। इसमें निम्नलिखित चरण हैं:

**सार्थक शब्दों के माध्यम से साक्षरता-निर्देश शुरू करें :**

- वर्णमाला के अक्षरों को याद करने से शुरू करने की बजाय, सीएलडीई तरीक़े में बच्चों को सीधे ही उनके स्वयं के नाम, परिचित वस्तुओं, जानवरों और पक्षियों के नाम जैसे पूर्ण शब्दों से परिचित कराया जाता है। यदि बच्चे के घर की भाषा में किसी वस्तु या जानवर के लिए कोई अलग शब्द है तो शिक्षक बच्चे को यह समझने में मदद करते हैं कि एक ही वस्तु के लिए दो ऐसे शब्द हो सकते हैं जिनके अर्थ समान हों। उस शब्द को जैसे लिखा जाता है वैसे ही बोलने में बच्चे की मदद की जाती है, यह स्वीकार करते हुए कि बच्चे की अपनी भाषा में उसके लिए एक अलग शब्द का उपयोग किया जाता है।
- बच्चों को पूरे शब्दों को लिखने का अभ्यास करने दें : लिखित शब्दों से परिचित होने की प्रक्रिया में बच्चे उन शब्दों को लिखने का अभ्यास करते हैं जो उन्होंने सीखे हैं।
- शब्दों से पहचान को बढ़ाने के लिए खेलों और गतिविधियों का उपयोग करें : जैसे-जैसे बच्चे पूरे शब्द सीखना शुरू करते हैं, शब्दों से उनकी पहचान को, विभिन्न खेलों और गतिविधियों जैसे चित्र-शब्द मिलान, छूटे हुए अक्षर भरना और बिंगो गेम के माध्यम से बढ़ाया जाता है।
- कविताएँ और गाने सिखाएँ : बच्चों को कविताएँ और गाना गाने में आनन्द आता है। गानों का प्रिंट उन्हें दिया जाता है ताकि उन्हें गाते समय वे उसका अनुसरण कर सकें। एक ही कविता या गीत को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करके गाया जा सकता है - जब ऐसा करते हैं तो जिन बच्चों के घरों में अलग भाषा बोली जाती है उन्हें लगता है कि उन्हें भी कक्षा में शामिल किया जा रहा है और वे कक्षा के साथ जुड़ाव महसूस करते हैं।
- कहानी की पुस्तकों से परिचय कराएँ : जैसे-जैसे बच्चे पढ़ने और लिखने के माध्यम से लिखित शब्दों से परिचित होते जाते हैं, वैसे-वैसे उन्हें कहानी की पुस्तकों से भी परिचित कराया जाता है। इसके लिए कहानी को ज़ोर से पढ़ने और पुस्तक सम्बन्धी अन्य गतिविधियाँ करवाई जाती हैं।
- बच्चों को लिखित अभिव्यक्ति करने के लिए प्रोत्साहित करें : सीएलडीई पद्धति में पढ़ना और लिखना साथ-साथ चलते हैं। बच्चों को जो पढ़ाया जा रहा है उसे लिखने और उसके परे भी लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- जब बच्चे कई पूर्ण शब्दों को पढ़ना सीख लें तब औपचारिक रूप से उन्हें अक्षर और मात्रा का परिचय दें।

**सीएलडीई की शिक्षण विधि**

सीएलडीई शिक्षकों के प्रशिक्षण में इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि भाषा और साक्षरता की अवधारणात्मक समझ विकसित करने में उनकी मदद की जाए। साक्षरता का अर्थ है स्वतंत्र रूप से सोचने में सक्षम होना, जो पढ़ा है उसका अर्थ समझना और लेखन के माध्यम से अपने विचारों, सोच या भावनाओं को सम्प्रेषित करने में सक्षम होना। सीएलडीई पद्धति में अर्थ-निर्माण को प्रमुखता दी जाती है और डिकोडिंग करना बाद में आता है। शिक्षकों की मदद इस बात में भी की जाती है कि वे भाषा की प्रकृति को ध्वनि-प्रतीक प्रणाली के रूप में समझें। वे उस तरीक़े पर चर्चा करते हैं जिससे बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने घर में बोली जाने वाली भाषा सीखते हैं। बच्चों को देखकर शिक्षकों को उनके अधिगम में खेल के महत्त्व का एहसास होता है। सीएलडीई शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वे :

- बच्चों को न तो डाँटें और न ही दण्ड दें वरन एक दोस्ताना और भयमुक्त वातावरण का निर्माण करें।
- बच्चों को उस भाषा में स्वतंत्र रूप से बोलने के लिए प्रोत्साहित करें जिसमें बच्चा सहज हो। अगर शिक्षक

बच्चे की घरेलू भाषा बोल सकते हों तो इससे बहुत मदद मिलेगी। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे बच्चों की बातें ध्यान से सुनें और उनके साथ दोस्ताना तरीक़े से बातचीत करें और बच्चे की भाषा को समझने की कोशिश करें।

- सीएलडीई पद्धति में निहित सिद्धान्तों और सहायक पुस्तकों से परिचित हों। दिए गए दिशा-निर्देशों के अनुसार पुस्तकों का उपयोग करें।
- खेल के माध्यम से सिखाएँ जैसे अभिनय-गीत को सीखना और सुनाना, चित्र बनाना और रंग भरना, बच्चे की उँगली को इन कविताओं की पंक्तियों पर चलाते हुए पढ़ने की नकल करना (भले ही पढ़ने की वास्तविक क्षमता अभी तक विकसित नहीं हुई हो) और पिक्चर-कार्ड के साथ खेलना आदि। इन विधियों का उपयोग करके शिक्षक पाठ्य से बच्चे का परिचय कराने और बच्चे को सहजता से उस पाठ्य को स्मृति में अंकित करा पाने में मदद कर सकते हैं। खेल के माध्यम से बच्चे न केवल उन बातों का अभ्यास करते हैं जिन्हें वे जानते हैं, बल्कि वे नई चीज़ें भी सीखते हैं। अब यह बात मान्य है कि वास्तव में खेल संज्ञानात्मक विकास को सुगम बनाता है।
- जब भी आवश्यकता हो और सम्भव हो, कविताओं और गीतों का अनुवाद बच्चों की घरेलू भाषा में करें। चूँकि आदिवासी ओडिशा में कई भाषाएँ हैं, इसलिए शिक्षक के लिए ऐसा करना हमेशा सम्भव नहीं होता है।
- बच्चों के अधिगम का समर्थन करने के लिए टीएलएम बनाएँ और उनका उपयोग करें।
- कहानियों, रोल-प्ले(role-play), ज़ोर से पढ़ना, नाटकीयकरण और ऐसी अन्य गतिविधियों का उपयोग करके बच्चों की किताबों में रुचि विकसित करें।
- स्कूल के आस-पास के समुदाय के साथ अच्छा तालमेल रखें।

**सहायक सामग्री**

सीएलडीई कार्यक्रम में काऊ डाके क (कौवा क कहता है) नामक एक कार्यपुस्तिका-एवं-प्राइमर बच्चों और शिक्षकों दोनों को बहुत पसन्द आई है। इसकी प्रस्तावना में सीएलडीई पद्धति में निहित मूल अवधारणाओं को समझाया गया है। इसमें चित्र बनाने और रंगने का महत्त्व, बच्चों द्वारा प्रतीकों की सही ढंग से नकल करने की आवश्यकता, दो-आयामी निरूपण को समझने का महत्त्व और पढ़ने के विकास के क्रमिक चरणों को भी समझाया गया है। इसके साथ ही यह प्रस्तावना शिक्षकों को उनकी पाठ-योजना बनाने में मदद करती है और कक्षा की गतिविधियों के लिए कई सुझाव देती है। काऊ डाके क के अलावा इस कार्यक्रम ने कई अन्य टीएलएम विकसित किए हैं जिनका उपयोग शिक्षक अपनी कक्षा के अधिगम को जीवन्त बनाने के लिए कर सकते हैं।

**क्या सीएलडीई प्रभावी है?**

एमजीके का दौरा करने से हमें पता चलेगा कि यह पद्धति कितनी प्रभावी है। जब मैं शुरू में इस स्कूल में गई तो कक्षा एक के उन बच्चों से बेहद प्रभावित हुई जिन्होंने अपने जीवन में पहली बार स्कूल आना शुरू किया था और ऐसा करते हुए उन्हें लगभग छह महीने ही हुए थे। जब इन उत्साही छोटी लड़कियों से नाम लिखने को कहा गया तो उन्होंने निस्संकोच एक-दूसरे का नाम लिख दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने मेरा नाम सुनकर उसे भी ख़ुशी-ख़ुशी लिख दिया। उनमें से बहुतों ने पुस्तकालय से पुस्तकें ली थीं और वे उन्हें पढ़ने में सक्षम थीं! इस बात ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया कि दूसरे स्कूलों में बहुत सारे बच्चे कक्षा सातवीं तक पहुँचने के बाद भी क्यों नहीं पढ़ पा रहे थे।

> जब सीएलडीई को विभिन्न जनजातीय जिलों के 18 स्कूलों में पायलट किया जा रहा था तो उसका प्रभाव दिख रहा था। जब इन स्कूलों में कोई मिलने वाला आता तो वह आत्मविश्वासी और जिज्ञासु बच्चों से घिर जाता। बच्चे उससे बातचीत करने के लिए काफ़ी इच्छुक रहते थे, जबकि अन्य स्कूलों के बच्चे अक्सर आगन्तुकों से दूर भागते या चुप-चुप रहते। नियमित स्कूली शिक्षा के पूरक के रूप में जहाँ कहीं भी सीएलडीई पद्धति का उपयोग किया गया, वहाँ पठन-स्तर में काफ़ी सुधार हुआ। यह सुधार बड़े बच्चों के मामले में सबसे ज़्यादा प्रभावशाली था जो तब तक सरल शब्दों को पढ़ने में भी असमर्थ थे। सीएलडीई प्रोजेक्ट के शिक्षकों में से एक, ईश्वर सौंटा ने उन परिवर्तनों के बारे में बात की जो उन्होंने दो बच्चों में देखे थे। यह बच्चे एक आवासीय विद्यालय में पढ़ते थे लेकिन फ़िर उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। जब वे ईश्वर के स्कूल में शामिल हुए तो वे दोनों बिल्कुल भी नहीं पढ़ पाते थे। ईश्वर कहते हैं, " मेरी कक्षा में एक साल पढ़ने के बाद अब वे धाराप्रवाह पढ़ने वाले पाठक और उत्सुक शिक्षार्थी बन गए हैं।" 18 स्कूलों में सीएलडीई पायलट प्रोजेक्ट अब समाप्त हो गया है और केवल यह आशा की जा सकती है कि पढ़ने में हुए लाभ और स्कूली शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बच्चों के साथ बने रहेंगे।

इस बीच एमजीके में रखी गई साक्षरता और अधिगम की मज़बूत नींव के कई अप्रत्याशित परिणाम सामने आए हैं। यह एक निम्न-प्राथमिक विद्यालय है और लड़कियों को प्राथमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के लिए सरकारी स्कूल में जाना पड़ता है। कुछ ही लड़कियाँ उससे आगे की पढ़ाई जारी रख पाती हैं। लेकिन एमजीके में निर्मित, मज़बूत शैक्षिक आधार

अन्य तरीक़ों से उनकी मदद करता है। उदाहरण के लिए एक लड़की अपने नियोक्ता से उस समय सवाल कर सकी जब उसे मिलने वाली मज़दूरी उतनी नहीं थी जितनी के लिए वह हस्ताक्षर कर रही थी। "ओह, क्या तुम स्कूल गई हो – कौन से स्कूल?" उन्होंने पूछा था।

चूँकि एमजीके मुख्य रूप से आदिवासी लड़कियों के लिए खोला गया था, इसलिए कुम्हारों वाले पड़ोसी गाँव ने शुरू में अपनी लड़कियों को उस स्कूल में नहीं भेजा। लेकिन यह सुनकर कि एमजीके की आदिवासी लड़कियाँ स्कूल में अच्छी तरह से सीख रही हैं और उनमें से कुछ ने तो नवोदय स्कूल में दाख़िला लेने में भी कामयाबी हासिल की है, कुम्हारों के गाँव ने भी अपनी लड़कियों को एमजीके में भेजने का फैसला किया। शायद अच्छी स्कूली शिक्षा, सदियों पुरानी मानसिकता को बदलने का काम कर सकती है!

इस लेख को समाप्त करते हुए मेरा मन काशीपुर की शान्त पहाड़ियों की ओर चला जा रहा है। हर रोज़ जब सूरज वहाँ की धरती को गर्म करता है और मवेशी चरने के लिए निकलते हैं तो हवा अचानक बच्चों की हँसी से भर जाती है। क्योंकि छोटी लड़कियाँ हँसती हुई आती हैं और उनकी चटर-पटर से वहाँ का इलाका और जंगल चहक उठता है। वे स्कूल में ख़ुश होती हैं, कहानियाँ पढ़कर ख़ुश होती हैं, कहानियाँ लिखकर और उन्हें चित्रित करके ख़ुश होती हैं। जिस तरह हवा में उनकी आवाज़ भरी होती है, उसी तरह उनके स्कूल की दीवारें भी उनकी कला और लेखन से भरपूर रोशन होती हैं। एमजीके में होना और बच्चों को खिलते हुए देखना वास्तव में एक अनूठा अनुभव है।

*You may like to read more about the teacher training part of CLDE at*
http://ncert.nic.in/publication/journals/pdf_files/vtte_aug_2018.pdf (pg47 - 58)

*A link to an article about MGK is here:*
https://thewire.in/education/in-odhisa-a-school-quietly-empowers-tribal-girls-with-its-empathetic-vision

**इन्दिरा विजयसिम्हा** मानव कल्याण और इसे बढ़ावा देने या नुक़सान पहुँचाने में शिक्षा की भूमिका के बारे में गहन सरोकार रखती हैं। उनके अनुसार मानव कल्याण पारिस्थितिकी तन्त्र में सभी प्रतिभागियों— यानी मानव, ग़ैर-मानव और सामग्री —के बीच पारस्परिक रूप से सम्बन्धों को पुष्ट रखने और उन्हें बनाए रखने का एक जाल है। एक शिक्षक और शिक्षक-प्रशिक्षक के रूप में उन्होंने जो कार्य किया, उसने शिक्षा की प्रक्रियाओं के बारे में उनके मन में गहरे प्रश्न पैदा किए और उन्हें पूर्णा लर्निंग सेंटर – एक 'वैकल्पिक' स्कूल शुरू करने के लिए प्रेरित किया। इन्दिरा अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से जनवरी 2020 में सेवानिवृत्त हुई हैं। वर्तमान में वे पूर्णा के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। शैक्षिक और लोकप्रिय पत्रिकाओं में उनके कई लेख प्रकाशित हो चुके हैं। उनसे indira502@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

**इसके** अलावा हमें भारत की बहुभाषी यथार्थता के बारे में भी पता होना चाहिए और उसे स्वीकार करना चाहिए। हर भारतीय बहुभाषी होता है जिसमें विविध मौखिक अभिव्यक्तियाँ शामिल रहती हैं। अधिकांश बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं और साथ ही अपने आस-पास की दुनिया से अन्तःक्रिया करते हैं तो किसी-न-किसी तरह भाषा की अनूठी प्रवाहिता के सम्पर्क में आते हैं। साक्षरता के लिए एक ठोस आधार तैयार करने के लिए कक्षा में बच्चे की भाषा और मौखिकता के लिए स्थान बनाना बहुत ज़रूरी है।

*-सक्तिब्रता सेन और निधि विनायक, व्यापक साक्षरता कार्यक्रम के आवश्यक स्तम्भ, पेज 59*